

— सम् 1) *zusammensitzen, um Etwas (acc.) oder Jmd versammelt sein, sich versammeln*: यत्रा नरः समासते मुजाताः RV. 7, 1, 4. समस्मिं ज्ञायमान आसत् याः 10, 93, 7. त्वां यदग्नें पशवंः समासते 3, 9, 7. AV. 12, 2, 51. 13, 2, 27. सर्वे तत्र समासते MBh. 2, 304. 379. तं ज्ञाते मातरः सर्वाः परिवार्य समासते 3, 10474. इमे च ते सूर्यमानवर्चसः समासते वृत्रकृपाः क्रतुं यया 1, 2104. mit dem instr.: ततो राज्ञा समासीनाः सर्वे ते वनवासिनः Sāh. 6, 27. — 2) *sitzen*: पूर्वा संध्यो जयंस्तिष्ठत्सावित्रीमार्कदर्शनात्। पश्चिमा तु समासीनः सन्यग्नविभावनात् ॥ M. 2, 101. 102. प्रत्युवाच समासीनं वसिष्ठम् R. 2, 114, 8. भृगुतुङ्ग समासीनमचीकम् Vicv. 11, 11. — 3) *zur Berathung zusammensitzen, Rath halten*: दृषामहे समासीनानां वचो विज्ञानमा देरे AV. 7, 12, 3. ते ह वैश्वानरे समासत तेषां ह वैश्वानरे न समियाय sie berriethen sich über V. und wurden über ihn nicht einig Çat. Br. 10, 6, 1, 1. — 4) *es mit Jmd (acc.) oder Etwas aufnehmen, gewachsen sein, widerstehen*: कस्तान्युधि समासीत MBh. 3, 372. तं समाचक्ष्व यः समासीत मां मृधे 14, 822. न नागा न च गन्धर्वाः — तव राम रणे शक्ताः शरवेगं समासितुम् R. 5, 36, 50. Vgl. — प्रतिसम्.

— प्रतिसम् *es mit Jmd aufnehmen, Jmd gewachsen sein, widerstehen*: एतान् — को ऽन्यः प्रतिसमासेत कालात्तत्रयमादृते MBh. 3, 17314. न — भीष्मद्रोणाद्यः युद्धे शक्याः प्रतिसमासितुम् 1904. कथं शक्यति तन्न एकः प्रतिसमासितुम् R. 3, 42, 23. न नागा न च गन्धर्वाः — तव राम रणे शक्ता वेगं प्रतिसमासितुम् 5, 68, 19. द्रोणकर्णप्रभृतयो येन प्रतिसमासिताः । रणे MBh. 14, 1830. Vgl. — सम् 4.

3. श्राम् *os, Mund, Gesicht*; nur in zwei Formen gebräuchlich: 1) *abl. श्राम्* (mit श्रा) *von Mund zu Mund, aus unmittelbarer Nähe*: वर्षेते विज्ञवास श्रा कृणोमि RV. 7, 99, 7. — 2) *instr. श्रामो* *adv. gebraucht in Bedd., welche mit coram nahe zusammentreffen: vor und von Angesicht, mündlich; persönlich, gegenwärtig, leibhaftig*; daher Naigh. 2, 16 unter den Wörtern für *nahe* aufgezählt. तं होता मूर्ध्नि वक्रिरासा विडुष्टः। श्रमे यति दिवो विशः RV. 6, 16, 9. स मन्द्रया च विडुष्ट्या वक्रिरासा विडुष्टः। श्रमे रयि मधर्वद्यो न श्रा वहे 7, 16, 9. प्रजावता वचसा वक्रिरासा च ऊवे नि च सत्सीह देवैः coram vehens 1, 76, 1. 129, 5. 10, 113, 3. त्वे श्रमे विश्वे श्रमतासो श्रुहे श्रामा देवा ह्विरदृष्ट्याङ्गुलम् *persönlich gegenwärtig* 2, 1, 14. विश्वा यश्रयणीरभ्यासा वाजेषु सामहेन् *cominus, Mann gegen Mann* 5, 23, 1. भसदशो न यमसान् श्रामा *er kaut wie ein Ross, das man von vorn am Zügel hält*, 6, 3, 4. अथ युतानः पित्रोः सचासामनुत् गुक्षुं चारु पशैः 4, 3, 10. अस्य हि स्वयंशस्तर श्रामा विधर्मन्मन्यते 5, 17, 2. न न इद्धि वार्यमासा संचते सूर्यः 5. वचास्यासा स्वविराय तन्म *von Angesicht, unmittelbar* 6, 32, 1. श्रयस्यासा विडुष्ट्या जेन्यो वर्षा 1, 140, 2. श्रामा विवासादिदिमिमुह्येत् 152, 6. श्रामा गावो वन्ध्यासो नोत्तणः 168, 2. 10, 1, 3. 20, 3. 40, 6. 67, 10. Vgl. श्रामया. — Im comp. s. श्रादन्न, श्रास्पात्र, श्रानात्, स्वात्; vgl. auch noch श्रामन् und श्राम्य.

1. श्राम *m. Asche, überh. leicht verfliegender Staub*: श्रामो व्लासो भवतु मूर्त्रं भवत्वामयत् AV. 9, 8, 10. Çat. Br. 12, 4, 1, 4. श्रामाः पांसवः 4, 3, 1, 9. Daraus ist eine Personification श्रामपांसवः 2, 3, 2, 1. 3 gebildet, welche zeigt, dass श्राम von श्रम् abgeleitet wurde. Vgl. 2. श्रामत्.

2. श्राम (von 2. श्रम्) *m. (nach dem Sch. auch n.) Bogen* H. 773. — Vgl. श्राम.

3. श्राम (von 2. श्राम्) 1) *Sitz* s. स्वासस्थ. — 2) *n. Gesäss*: तस्य यया

कृपासं पुण्डरीकमेवमन्तिषी तस्य Kānd. Up. 1, 6, 7. — 3) *Nähe* (?), s. श्रामात्.

श्रामसार (2. श्रा + सं) 1) *adj. beständigem Wandel unterworfen*: श्रामसारं जगत्यस्मिन्वेका नित्या ह्यनित्यता Kathās. 3, 103. — 2) *०* *adv. so lange der beständige Wandel der Welt besteht, bis zum Ende der Welt* Rāga-Tar. 3, 119.

श्रामक्त *s. u. सञ्ज* mit श्रा.

श्रामक्ति (von सञ्ज mit श्रा) *f. 1) das an-Etwas-Hängen (übertr.): विषयासक्ति Çuk. 40, 1. — 2) das sich-an-Jmd-Anhängen, Nachstellung*: कृत्यासक्तिर्व्यप्यते RV. 10, 85, 28. — ० *क्ति* *adv. geflissenlich*: य श्रामक्ति सत्यं वदति Çat. Br. 9, 3, 1, 16. 17. — Vgl. d. folg. W.

श्रामङ्ग (wie eben) 1) *m. a) das Anhaften, Anhaken, Anhängen (auch in übertr. Bed.)* AK. 3, 3, 2. पादाकृष्टव्रततिवलय्यासङ्गसंज्ञातयाणः (गजः) Çik. 32. पङ्कनं शशविलासङ्गं प्रकाशते Kumāras. 3, 9. मृगमदघनसारासङ्ग-सौरभ्यभ्यः (पाणिः) Dhūrtas. 92, 8. निवृत्तान्यपुरुषासङ्गा Kathās. 12, 90. Vid. 269. कात्तासङ्ग Pañkāt. V, 83. त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गम् Bhag. 4, 20. विषयासङ्ग Prab. 61, 14. चित्तासङ्ग Sāh. D. 79, 20. — *b) das sich-an-Jmd-Anhängen, Nachstellung*: ते ऽसुरेभ्य श्रामङ्गाद्विभयो चक्रुः Çat. Br. 1, 1, 2, 3. 3, 1, 5. 4, 4, 8. 6, 1, 11. ततो ह्येनामासङ्गा न विन्दति 5, 2, 3, 5. — *c) N. pr. eines Mannes* RV. 8, 1, 32. 33. — 2) *n. eine bes. wohlriechende Erde (तुवरी) Rāśān. im ÇKDr. — 3) adj. und adv. = श्रामक्त ununterbrochen* Ġarādh. im ÇKDr. — Vgl. उत्तरासङ्ग.

श्रामंगत्य *n. nom. abstr. von 3. श्र + संगत* P. 5, 1, 121. *Uneinigkeit* Wils.

श्रामङ्गिनी (von सञ्ज mit श्रा) *f. Wirbelwind* Trik. 1, 1, 80.

श्रामङ्गिम (von श्रामङ्ग) *m. eine bes. Art Verband* Suçr. 1, 33, 14. 18.

श्रामन (von सञ्ज mit श्रा) *s. चक्रमासन्न*.

श्रामञ्जन (wie eben) *n. 1) das Anhängen, Anhaken*: स एव श्रुङ्गुश श्रामञ्जनाय At. Br. 3, 11. Kāti. Ça. 25, 10, 14. व्रततिवलय्यासञ्जनात् Çik. 32, v. l. — 2) *Henkel, Haken* Çat. Br. 6, 7, 1, 17. 19. 21.

श्रामञ्जनवत् (von श्रामञ्जन) *adj. mit einem Henkel (Schleife u. dgl.) versehen* Kāti. Ça. 7, 3, 20.

श्रामति (von सद् mit श्रा) *f. 1) Anschluss, unmittelbare Verbindung* H. an. 3, 250. Med. t. 95. der Worte in einem Satze Sāh. D. 8, 17. 22. — 2) *Erlangung* H. an. Med.

श्रामद् (wie eben) *s. डरासद्*.

श्रामदन् (wie eben) *n. 1) das Sitzen. — 2) Sitz*: श्रामदनाद्याकृवनीये संदकेत् Kāti. Ça. 25, 7, 8.

श्रामन् *n. Mund, Rachen*; findet sich im sg. instr. dat. abl. loc. (श्रामन् und श्रामन्ति) und pl. instr. दधामि ते युमती वाचमासन् RV. 10, 98, 2. श्राम्ना वृकस्य 1, 116, 14. मधुपेभिरासन्भिः 34, 10. 40, 76, 7. स्वरितार श्रामन्भिः 1, 166, 11. 2, 39, 6. 3, 26, 7. 1, 73, 1. 40, 53, 11. 87, 2. VS. 12, 64. AV. 6, 12, 3. सन्वासाह्य श्रामस्यम् 56, 3. 10, 10, 28. 18, 3, 1. Çat. Br. 3, 6, 3, 20. Taht. Br. 3, 1, 1, 1. Nach P. 6, 1, 63 sind alle casus mit Ausnahme des nom. und acc. sg. und du. vorhanden; der Scholiast hat: श्रामानि, श्रामभ्याम्. Kāc. (s. Siddh. K. zu P. 6, 1, 63) und Vop. 3, 39 identificieren aus Unkenntniß श्रामन् mit श्रामन. — Vgl. श्राम् und श्राम्य.

1. श्रामन (von 2. श्राम्) *m. n. gaṇa* अर्थर्चादि zu P. 2, 4, 31. Siddh. K.